राष्ट्र सेविका समिति स्थापना दिवस

विजयादशमी, आश्विन शुक्ल पक्ष

परिचयात्मक सारांश

भारत की महिलाओं के लिए आश्विन शुक्ल पक्ष विजयादशमी 1993 विक्रम संवत अर्थात 25 अक्टूबर 1936 का दिन एक ऐतिहासिक करवट का क्षण था, जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार से प्रेरित एक महिला शिक्षाविद् लक्ष्मी बाई केलकर ने वर्धा में राष्ट्र सेविका समिति नामक महिला संगठन की स्थापना की थी। राष्ट्र सेविका समिति भारत की महिलाओं का सबसे बड़ा संगठन है जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दर्शन और विचारधारा के अनुरूप महिलाओं के बीच उनके सर्वांगीण विकास के लिए काम करता है, किन्तु यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की महिला इकाई नहीं है। यह एक स्वायत्त और संघ से मुक्त और स्वतंत्र संगठन है। यद्यपि दोनों संगठन वैचारिक और संरचनात्मक रूप से एक दूसरे के समान हैं। यह गतिविधियों महिलाओं विशिष्ट विशिष्टताओं के अनुरूप भिन्न प्रकृति की हैं । समिति तीन मुख्य आदर्शों-मातृत्व (सार्वभौमिक मातृत्व) कृतित्व (दक्षता और सामाजिक सक्रियता) नेतृत्व (नेतृत्व) के साथ हिंदू महिलाओं को जागृत, सशक्त और कार्यबद्ध करने पर केंद्रित है

मुख्य बिंदु

- "महिला परिवार के लिए और राष्ट्र के लिए प्रेरणादायक शक्ति है । जब तक यह बल नहीं जागेगा , तब तक समाज प्रगति नहीं कर सकता।
  -लक्ष्मीबाई केलकर, राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापक
- हालांकि राष्ट्र सेविका समिति को राष्ट्रीय स्वयमसेवक संघ की "महिला इकाई " के रूप में माना जाता है जबकि राष्ट्र सेविका समिति अपनी स्थापना के समय से ही संघ की विचारधारा के साथ एकरूपता तो रखती है किन्तु यह एक स्वतंत्र, समानांतर और समलक्षी संगठन रहा है ।
- लक्ष्मीबाई केलकर ने विजयादशमी (दशमी, आश्विन, शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 1993) यानि 25 अक्टूबर, 1936 को इस संगठन की स्थापना की।
- लक्ष्मीबाई केलकर ने राष्ट्रीय स्वयमसेवक संघ के संस्थापक डॉ. के.ब. हेडगेवार की सलाह पर महिलाओं के लिए एक स्वतंत्र संगठन की शुरुआत की।
- राष्ट्र सेविका समिति भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बनाए रखने के लिए काम करने वाला सबसे बड़ा हिंदू महिला संगठन है ।
- राष्ट्र सेविका समिति देश भर में स्थित 5,216 केंद्रों के माध्यम से संचालित होती है जिनमें से 875 दैनिक संचालित होती हैं, जिनमें से 1 लाख से 10 लाख सदस्य हैं , और इसकी 10 देशों में विदेशी शाखाएं हैं, जो हिंदू सेविका समिति नाम का उपयोग करती हैं।

- समिति अपनी विभिन्न केंद्रों की सेविकाओं के माध्यम से शाखाओं का आयोजन करती है, जहां छात्राओं को योग, गायन, नृत्य, सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है और सैन्य प्रशिक्षण भी दिया जाता है ।
- राष्ट्र सेविका समिति गरीब और वंचित लड़कियों और महिलाओं के लिए आत्मनिर्भर साधन उपलब्ध कराने के लिए ४७५ से अधिक सेवा परियोजनाएं भी चलाती है ।
- राष्ट्र सेविका समिति समाज में हिंदू महिलाओं की सकारात्मक सामाजिक भूमिका के लिए उन्हे मार्गदर्शक और अभिकर्ता के रूप में विकसित करने पर केंद्रित है ।
- "वह मराठी के महानतम वक्ताओं में से एक है, उनके भाषणों से कैसेट तैयार किया जाना चाहिए, ताकि लोग वंदनिया मौसीजी के भाषणों से वक्ता की कला सीख सकें" ।

- प्रसिद्ध मराठी कवि 'एआर' देशपांडे

- " उन दिनों जब समाज में महिलाओं को अपने घरों से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी थी, वंदनीया मौसीजी उन्हें एक साथ लाने और उन्हें जीवंत संगठन में एकजुट करने में सक्षम हुई। महिलाओं ने घर से बाहर अभ्यासों में भाग लिया और दिखाया कि वे कोमलांगी और दब्बू नहीं बल्कि शक्तिशाली सेविकाएं थीं"।

  -तरुण भरत

विस्तृत विवरण

संदर्भ और चिंताएं

निरंतर विदेशी आक्रमणों और उसके बाद विदेशी शासनों के कारण राष्ट्र के प्रति हमारी भक्ति और समर्पण की भावना और ' जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि दापी गरीयसी '- भारत को मातृभूमि के रूप में मानने की हमारी परंपरा में भारी गिरावट आई। हम अपनी मूल और दिव्य पहचान को भी भूल गए। हिंदू के रूप पैदा हुए एक व्यक्ति को स्वयं को हिंदू के रूप में प्रस्तुत करने और पहचान बताने में हीनता और असहजता का अनुभव होने लगा । अलगाववादी मानसिकता, स्वार्थ और आत्मकेंद्रित होने के कारण स्वाभिमान और देशभक्ति की भावना को ग्रहण लग गया था । जब ऐसी स्थिति लंबे समय तक होती है तो किसी राष्ट्र के लिए लंबे समय तक जीवित रहना बहुत कठिन होता है। ऐसे संदर्भ में हमारे अस्तित्व की समस्या बहुत विकट हो गई थी। हमारे लिए यह आवश्यक हो गया था कि हम अपने सम्मानजनक अस्तित्व के लिए हिंदुत्व की भावना की रक्षा करें और उसे बढ़ावा देने का संगठनात्मक प्रयास करें ।

ऐसे में एक महिला जिनका नाम **लक्ष्मीबाई केलकर** था और प्यार से लोग जिन्हें मौसी जी भी कहते थे, उन्होंने महिलाओं के बीच इस कार्य को दृढ़ता के साथ आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया । ये संयोग ही था कि इनका नाम भी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के नाम के समान था और इनके हौसले भी झांसी की रानी की तरह ही बुलंद थे। विदेशी परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े पुरुष प्रधान समाज में जब महिलाओं का स्थान चूल्हे-चौके तक ही सीमित था, ऐसे समय में लक्ष्मीबाई ने स्पष्ट किया कि महिलाएं ही परिवार, समाज और देश की मूलाधार है। यदि किसी समाज की महिलाएं संस्कारित और सक्षम हो जाएं तो वह परिवार का भला कर सकती है, यदि

परिवार का भला हो जाए तो समाज और देश भी बदल सकते हैं। महिलाओं के प्रति उनकी ये चिंता अचानक ही नहीं पैदा हुई थी। इसके पीछे बहुत बड़ा हाथ उनकी मां यशोदाबाई का भी था। यशोदाबाई जागरूक महिला थीं और देश और समाज की घटनाओं से भली-भांति परिचित रहती थीं। तब लोकमान्य तिलक के अखबार केसरी को खरीदना या पढ़ना देशद्रोह के समान माना जाता था, लेकिन यशोदाबाई न केवल केसरी खरीदती थीं, अपितु आसपास की महिलाओं को एकत्र कर उसे पढ़ कर सुनाया भी करती थीं। अपनी मां से मिले संस्कारों और व्यक्तिगत अनुभवों ने उन्हें सिखाया कि भारत के लिए राजनीतिक मुक्ति तो आवश्यक है ही, लेकिन साथ ही महिलाओं का सशक्तीकरण, जागरण और स्वाबलंबन भी आवश्यक है। आवश्यकता है उन्हें इस योग्य बनाना कि वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकें। लक्ष्मीबाई केलकर का जन्म 6 जुलाई 1905 को नागपुर में हुआ था । उनके बचपन का नाम कमल था लेकिन एडवोकेट पुरुषोत्तम राव से विवाह के पश्चात उन्हें लक्ष्मीबाई नाम मिला। उनके पिता भास्करराव दाते पिता सरकारी कर्मचारी थे । 27 वर्ष की अल्पायु में उनके पति का देहावसान हो जाने के कारण उन पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा किन्तु उन्होंने न् सिर्फ स्वयं को संभाला बल्कि समाज की अन्य महिलाओं को भी सक्षम बनाने का बीड़ा उठाया।लक्ष्मीबाई के बेटे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य थे। उनके माध्यम से वह संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार के संपर्क में आईं और उनकी प्रेरणा से उन्होंने 25 अक्तूबर, 1936 को विजयादशमी के दिन राष्ट्र सेविका समिति की नींव रखी। समिति के माध्यम से उन्होंने भारतीय नारी को अपना जीवन स्वपरिवार के साथ राष्ट्रधर्म के लिए समर्पित करने की प्रेरणा दी.लक्ष्मीबाई और उनकी सहयोगियों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी क्षमतानुसार भाग लिया। एक बार वो गांधी जी की एक सभा में गईं जहां उन्होंने लोगों से देश के लिए दान मांगा तो उन्होंने अपनी सोने की चेन उतार कर दे दी। समिति की सेविकाएं प्रभातफेरियां निकालतीं और लोगों में चेतना जगातीं, साथ ही उन्हें आत्मविकास की राह भी दिखातीं। वर्ष 1947 में जब बंटवारे के समय समूचा देश हिंसा और घृणा की आग में जल रहा था, लक्ष्मीबाई निडर होकर अपनी एक सहयोगी के साथ हिंदू महिलाओं को बचाने कराची पहुंच गईं। वहां उन्होंने 14 अगस्त को महिलाओं की एक सभा में उन्हें सांत्वना दी और साहस के साथ हालात से लड़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा - 'धैर्यशाली बनो, अपने शील का रक्षण करो, संगठन पर विश्वास रखो और अपनी मातृभूमि की सेवा का व्रत जारी रखो, यह हमारी परीक्षा का क्षण है। 'लक्ष्मीबाई ने उन महिलाओं को आश्वासन दिया कि भारत आने पर उनकी सभी समस्याओं का समाधान किया जाएगा। जब वहां से विस्थापित होकर कई परिवार मुंबई आए तो समिति ने उनके रहने-खाने का प्रबंध किया और असंख्य महिलाओं और युवतियों को आश्रय देकर उन्हें सुरक्षा ही नहीं, आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दी। लक्ष्मीबाई ने बंटवारे के समय ही नहीं, बाद में भी, जब भी भारत पर संकट पड़ा, अपने साहसी नेतृत्व का परिचय दिया और महिलाओं को देश की सेवा में तत्पर रहने के लिए प्रेरित किया। लक्ष्मीबाई ने जो पौधा रोपा था वह आज वट वृक्ष बन चुका है. आज राष्ट्र सेविका समिति भारत का सबसे बड़ा महिला संगठन है. देश भर में इसकी 3 लाख से अधिक सेविकाएं और 584 जिलों में 4,350 नियमित शाखाएं हैं। ये 855 से अधिक प्रकार के सेवाकार्य कर रही है। इनमें छात्रावास, निःशुल्क चिकित्सा केंद्र, लघु उद्योग से

पिछड़े और अभावग्रस्त वनवासी क्षेत्रों में विशेष रूप से कार्य कर रही है। नक्सलवाद और आतंकवाद से ग्रस्त क्षेत्रों की बच्चियों के लिए अनेक छात्रावास चला रही है जहां उनके निःशुल्क आवास और पढ़ाई की व्यवस्था की जाती है। इन छात्रावासों की अनेक लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वाबलंबी बन चुकी हैं। चाहे प्राकृतिक आपदा हो या देश पर कोई आक्रमण , समिति सदा ही सेवा, बचाव और सहायता कार्य में आगे रही है। वर्ष 1953 में समिति ने 'सेविका प्रकाशन' आरंभ किया जो विभिन्न भाषाओं में सामाजिक-राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशित करता है। मेधाविनी सिंधु सृजन समिति की प्रबुद्ध महिलाओं का समूह है जिसमें जानीमानी वकील, प्रोफेसर, कलाकार, लेखक आदि शामिल हैं. ये समय-समय पर राष्ट्रहित के विषयों पर सेमीनार और संगोष्ठी आदि आयोजित करता है और सेविकाओं को देश-विदेश के ज्वलंत विषयों की जानकारी और विश्लेषण उपलब्ध करवाता है। स्पष्ट है कि समिति देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर तो गर्व करती है, लेकिन हर अच्छी आधुनिक चीज को अपनाने के लिए भी तैयार रहती है। जब दुनिया में 'फेमिनिज्म' जैसी पश्चिमी विचारधाराओं का कोई नामोनिशान भी नहीं था, उस समय लक्ष्मीबाई ने महिलाओं के उत्थान और विकास के बारे में सोचा, किन्तु उन्होंने महिलाओं को परिवार या समाज से लड़ने के लिए नहीं उकसाया। उन्होंने तो महिलाओं को वह दर्शन दिया जिससे वे परिवार के भीतर ही नहीं, समाज और देश में भी केंद्रीय भूमिका निभा सकें और सबको साथ लेकर चल सकें।

सिद्धांत और दिशा निर्देश

समिति का दृढ़ विश्वास है कि हिंदू इस भूमि की राष्ट्रीय मुख्यधारा का निर्माण करते हैं और भारत की समग्र प्रगति के लिए उत्तरदाई हैं, उनकी प्यारी मातृभूमि और उनकी उत्पत्ति वेदों परंपराओं से प्रेरित तथा श्री राम और श्री कृष्ण, राणा द्वारा सम्मानित और गौरवशाली परंपराएं प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज और स्वामी विवेकानंद से प्रेरित है। एक असली हिंदू स्वयं को भारत की महिमा और निराशा से पहचानता है, भारतमाता का बच्चा होने पर गर्व करता है और स्वेच्छा से अपनी वेदी पर सब कुछ आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार रहता है और खुद को हिंदू के रूप में प्रस्तुत करने में गरिमामय महसूस करता है । हिंदुत्व इस विचार और भावना को बढ़ावा देना समिति का मुख्य उद्देश्य है ।

हमारी प्राचीन गौरवशाली संस्कृति का प्रतीक भगवा ध्वज हमारे देश के सम्मान का केंद्र बिंदु है। राष्ट्र सेविका समिति इस ध्वज को अपना गुरु मानती है और उसका दृढ़ विश्वास है कि हमारे सम्मान, गौरव और जीवन के हमारे मूल्यों को केवल आदर्शों को व्यवहार में लाकर ही सुरक्षित रखा जा सकता है ।

आत्मानुशासन किसी भी संगठन के संगठन में से एक महटवपूर्ण अवयव होता है। समिति सेविकाएं इस संबंध में विशिष्ट हैं। समिति में अनुशासन कोई आत्म केंद्रित तानाशाही नहीं है, इसमें एक परिवार के स्पर्श है । वे प्रमुख संचालिका को इस बड़े परिवार के प्रमुख के रूप में मानती हैं और स्वेच्छा से नियमों और आदेशों को संगठन के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक प्रेम के पवित्र बंधन के रूप में स्वीकार करती हैं ।

समिति ने इस सिद्धांत को भी प्रतिपादित किया है कि महिलाएं परिवार की ही तरह राष्ट्र को भी गढ़ने की आधार स्तंभ हैं । समिति देवी अष्टभुजा की पूजा करती है जो महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी का पूर्ण संयोग है। शक्ति, बुद्धि और धन का समन्वय राष्ट्र को उच्च स्थान पर ले

जाता है। देवी सभी आठ हाथों में हथियार गुणों का प्रतीक हैं, जो एक आदर्श हिंदू महिला के लिए आवश्यक हैं। वह उससे प्रेरणा लेती है और उनका प्रयोग मानवता के लिए और सेवा के लिए ही करती हैं ।

प्रबुद्ध मातृत्व हिंदू महिला का पोषित आदर्श है। समिति भारतीय इतिहास की वीरांगनाओं से अपनी प्रेरणा प्राप्त करती है । जीजाबाई ने इस देश को स्वतंत्र बनाने के लिए विदेशी शासकों से लड़ने के लिए अपने बेटे शिवाजी और उनके वनवासी मित्रों को प्रशिक्षित किया। हिंदू समाज के विभिन्न घटकों को संगठित करके हिंदू संप्रभुता की स्थापना का उनका एक निश्चित उद्देश्य था । हिंदू महिला एक शाश्वत मां है जो प्रेम, त्याग, समर्पण, निर्भयता, पवित्रता और भक्ति का प्रतीक है। अगर समय मांग हो तो कोमल हृदय वाली महिला निर्भीक और आक्रामक हो जाती है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई में नेतृत्व के अंतर्निहित गुणों के साथ-साथ स्पष्ट रूप से चरित्र की प्रबल शुद्धता थी। उसकी निडरता, देशभक्ति, और सैन्य के गुणों को सभी विदेशियों ने काफी सराहा हालांकि वे उनके प्रतिद्वंद्वी थे। रानी लक्ष्मीबाई घेराबंदी से भागने के दौरान अपने एक साथी पर आक्रमण होने के पश्चात मुड़कर ब्रिटिश सैनिकों के साथ सफलतापूर्वक लड़ीं । जब वह चारों तरफ से घिर गई तो उन्होंने गंगादास बाबा से अनुरोध किया कि वह उस झोपड़ी में आग लगा दे, जिस पर उन्होंने कब्जा कर लिया था, क्योंकि वह विदेशियों के हाथों किसी प्रकार की छेड़छाड़ का शिकार नहीं होना चाहती थी। इसी प्रकार इंदौर (मध्य भारत) की रानी देवी अहिल्याबाई होल्कर ने कुशल प्रशासन की उच्च प्रारूप प्रस्तुत किया है। मुक्त व्यापार और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को प्रोत्साहित करने में उनका योगदान बहुत सराहनीय है । एकात्म राष्ट्रीयता बनाए रखने के लिए उनकी प्रथाएं, उसके निष्पक्ष न्याय, बहुत प्रभावी थे ।उन्होंने एक बहुत ही सरल और निस्वार्थ जीवन का नेतृत्व किया, और अपने निजी उपयोग के लिए उन्होंने शाही खजाने से एक पाई का उपयोग नहीं किया । मातृत्व, नेतृत्व और कुशल प्रशासन इन महान वीरांगनाओं के जीवन से सीखने और पालन करने के योग्य गुण हैं ।

संघ और राष्ट्र सेविका समिति: समानताएं और अंतर

- दोनों संगठनों में खेलकूद, शारीरिक-बौद्धिक कार्यक्रम आदि एक ही होते हैं।
- संघ और समिति की प्रार्थनाएं अलग-अलग होती हैं।

- शाखाओं की आवृत्ति में भी अंतर है। महिलाओं के लिए पुरुषों की तरह रोजाना शाखा में इकट्ठा होना या आना कठिन होता है क्योंकि उन पर घरेलू जिम्मेदारियां बहुत होती हैं। इसलिए समिति के शाखाओ का दिन प्रतिदिन के बजाय अधिकतर साप्ताहिक होता है।
- संघ और समिति के शाखाओं का समय अलग-अलग होता है यानि सुबह देर से या दोपहर या शाम को।

कार्यक्रम

- प्रतिदिन और साप्ताहिक शाखाओं का गठन और उनका संचालन करना।

- शारीरिक शिक्षा, बौद्धिक विकास और वहां की लड़कियों को मनोबल बढ़ाने के लिए विभिन्न उपक्रम शुरू करना।

- हर साल बैठकों का आयोजन: शिशुओं, लड़कियों, गृहिणियों के लिए।

- वन-विहार और शिविरों का आयोजन - शिशुओं, लड़कियों और गृहिणियों के लिए।

- अखिल भारतीय और प्रांत, विभाग स्तर पर सम्मेलन का आयोजन।

- आरोग्य शिशिर, छात्रावास, उद्योग मंदिर, बालमंदिर संस्कार वर्ग सहित विभिन्न सेवाओं का प्रदर्शन अपने पन की भावना से करना । इस समय पूरे भारत में समिति द्वारा संचालित 22 हॉस्टल हैं, जहां लड़कियों शादी तक शिक्षा की जिम्मेदारी ली जाती है ।

-विश्व में हिंदुत्व का प्रसार और हिंदू भ्रातृत्व

राष्ट्र सेविका समिति के महिला सशक्तिकरण की धारणा पश्चिमी वामपंथी उदारवादी नारीवादी दर्शन से बिल्कुल अलग है। पश्चिमी नारीवाद पुरुषों और महिलाओं के बीच रुग्ण समानता और संघर्ष के माध्यम से समाधान की बात करता है, वहीं राष्ट्र सेविका समिति महिलाओं की भलाई की धारणा आत्मनिर्भरता, पारस्परिक सम्मान, और सहयोग पर आधारित है जो करुणा को उचित स्थान देता है । संक्षेप में , समिति संघर्षात्मक और विवादास्पद पश्चिमी नारीवाद के विरुद्ध नारीवाद का एक सृजनशील स्त्रीत्व का एक नया मॉडल उपलब्ध कराती है ।

संदर्भ

Ambekar, Sunil (2019) The RSS Roadmaps for 21st Century ,Rupa Publications, New Delhi

Anand , Arun (2021) How RSS inspired a young widow to build an all-women's organisation across India

https://theprint.in/india/how-rss-inspired-a-young-widow-to-build-an-all-womens-organisation-across-india/617386/ last retrieved on May 22, 2021

Rai, Rajani (1996) Life Sketch of Vandaniya Mavsi Ji, Samiti Prakshan, Nagpur

Tamarkar, Manjari (2005) Vandanita Mavsi Kelkar , Shilapa Prakshan , Pune

Taneja Rakesh (2019) Know Rashtra Sevika Samiti (Hindi)

https://zeenews.india.com/hindi/india/rss-vijaydashmi-and-rashtra-sevika-samiti/582501 last retrieved on May 22, 2021

https://sevikasamiti.org/